अहिंसक - नैतिक चेतना का प्रवर प्रतिनिधि

अणुव्रत

ई-संस्करण

वर्ष: 3, अंक: 8

दिसम्बर 2025

विगत की समीक्षा
आगत का सम्मान

वर्ष : 3 अंक : 8

दिसम्बर 2025

संपादक
संचय जैन

सह संपादक
मोहन मंगलम

संयोजक समाचार
पंकज दुधोड़िया

चित्रांकन
मनोज त्रिवेदी

पेज सेटिंग
मनीष सोनी

ई-संस्करण
विवेक अग्रवाल

आचार्य श्री तुलसी महान विचारक के साथ-साथ कर्मयोगी भी थे। उन्होंने 1947 में देश की स्वतंत्रता के समय से ही समाज के नैतिक एवं चारित्रिक विकास के लिए अणुव्रत आंदोलन का शुभारंभ किया। अणुव्रत की मशाल लेकर उन्होंने पदयात्रा द्वारा देशभर का जनजागरण किया। उनका व्यक्तित्व और कर्तृत्व सभी वर्गों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। आचार्य श्री तुलसी का अहिंसा, प्रेम और नैतिकता का संदेश राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

– **प्रणव मुखर्जी**, पूर्व राष्ट्रपति

अध्यक्ष : **प्रतापसिंह दुगड़**
महामंत्री : **मनोज सिंघवी**
कोषाध्यक्ष : **राकेश बरड़िया**

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

अणुव्रत भवन, 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली - 2
दूरभाष : 011-23233345
मोबाइल : 9116634512

www.anuvibha.org
anuvrat.patrika@anuvibha.org

संतुलित विकास की राह

21वीं सदी का चौथाई हिस्सा बीत चुका है। 25 वर्ष पूर्व पूरी दुनिया में नयी सहस्राब्दी को लेकर गजब का उत्साह था। तब और अब की तुलना करें तो बहुत कुछ बदल गया है। कुछ चिंताएं खोखली साबित हुईं तो कई नयी चिंताओं ने जन्म ले लिया।

बीते 25 वर्षों पर सरसरी नजर दौड़ाएं तो हम पाएंगे-

- ग्लोबल वार्मिंग बढ़ी है, प्राकृतिक आपदाएं बढ़ी हैं।
- युद्ध और सीमा-संघर्ष बढ़े हैं, हिंसा सत्ता का हथियार बनी है।
- स्क्रीन-टाइम और सोशल मीडिया का नशा बढ़ा है।
- बढ़ती आर्थिक महत्वाकांक्षा ने पारिवारिक जीवन को बाधित किया है।
- सहिष्णुता और धैर्य कम हुए हैं।

यह विश्लेषण हमें इस निष्कर्ष पर पहुँचाता है कि कोरा विकास नुकसानदेह भी हो सकता है। हमें संतुलित विकास चाहिए, जो मानव मात्र के लिए उपयोगी हो और जीवन में शांति और सुकून लाने वाला हो।

आज के इस माहौल में अणुव्रत और प्रेक्षाध्यान का महत्व इसीलिए बहुत बढ़ गया है। यदि प्रतिदिन कुछ समय हम खुद को दे सकें, अणुव्रत के संयम-दर्शन को और प्रेक्षाध्यान की तकनीक को अपना सकें तो हम स्वयं को बाहर घटित हो रही नकारात्मक घटनाओं से, उठा-पटक से, काफी हद तक अप्रभावित रखने में सफल हो सकते हैं। हर युग में यह समाधान प्रभावी रहा है और आने वाले हर युग में इसकी प्रासंगिकता बनी रहेगी। समाधान मौजूद है, इसका उपयोग हमें खुद ही करना होगा।

- संचय जैन

sanchay_avb@yahoo.com

■ प्रेरणा पाथेय ■

चरित्र-निर्माण का प्रयोग : अणुव्रत

■ आचार्य तुलसी

अणुव्रत दर्शन जीवन का दर्शन है। अणुव्रत के नाम से लाखों-लाखों लोग परिचित हैं, पर उसके दर्शन को समझने वाले लोगों की संख्या अधिक नहीं है। जब तक दर्शन समझ में नहीं आता है, उसके सिद्धांतों को आचरण में नहीं लाया जा सकता। सिद्धांत और आचरण अथवा ज्ञान और आचरण की दूरी को पाटना अणुव्रत का लक्ष्य है।

अणुव्रत आंदोलन हमारे सार्वभौम कार्यक्रमों का पहला पड़ाव है। इसके कारण हमारी सीमाओं का विस्तार हुआ। जब कभी, जहाँ कहीं लकीर से हटकर कोई बात होती है, उस पर ऊहापोह अस्वाभाविक नहीं है। अणुव्रत के लिए हमने अंतरंग और बहिरंग दोनों प्रकार के संघर्ष झेले, पर उन्हें लेकर न कभी हमारे मन में कोई घबराहट हुई और न निराशा। विरोध को विनोद मान हम अपनी शक्ति के अनुसार काम करते रहे। जैसे-जैसे अणुव्रत की उपयोगिता समझ में आयी, विरोध करने वाले स्वयं इसके साथ जुड़ते गये। अणुव्रत के लिए हमारे मन में एक ही आकर्षण था कि यह जीवन-मूल्यों को जन-जन तक पहुँचाने का सरल माध्यम था।

कौन हो सकता है अणुव्रती?

अणुव्रती बनने के लिए न तो जैन बनना जरूरी है और न अपनी धार्मिक आस्था को छोड़ना जरूरी है। जाति, प्रांत, देश, धर्म, भाषा, रंग, लिंग, वर्ण आदि कोई भी व्यवधान इसमें नहीं है। आत्म-संयम की प्रेरणा अथवा नैतिक जीवन की आकांक्षा रखने वाला कोई भी व्यक्ति अणुव्रती हो सकता है।

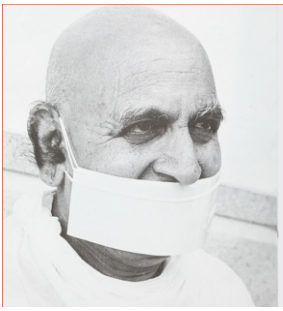

मंदिर, पूजा-पाठ, तीर्थयात्रा, भगवान आदि के साथ अणुव्रत का न तो कोई विरोध है और न कोई प्रतिबद्धता है।

अणुव्रत की आस्था मानवीय मूल्यों की आस्था है। जीवन की पवित्रता, जीवन-शुद्धि, व्यवहार-शुद्धि, नैतिकता या चरित्र, उसका कोई भी रूप हो सकता है। इस आस्था के साथ न तो परिस्थितिवाद का बहाना चल सकता है और न इसका दृश्य रूप ही बन सकता है। मंदिर, पूजा-पाठ, तीर्थयात्रा, भगवान आदि के साथ अणुव्रत का न तो कोई विरोध है और न कोई प्रतिबद्धता है। कार्यक्षेत्र में प्रामाणिकता - यही अणुव्रत की आस्था है। अणुव्रत का उपासना केंद्र मनुष्य का जीवन है। मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर, गुरुद्वारा, धर्मस्थान, दुकान, ऑफिस, कोर्ट आदि कोई भी स्थान हो, सर्वत्र अणुव्रत की उपासना हो सकती है। मंदिर में भक्ति और दुकान में धोखाधड़ी - यह दोहरी मानसिकता अणुव्रत के लक्ष्य तक पहुँचने में बाधक बनती है। अणुव्रत की आचार संहिता किसी वर्ग विशेष के लिए नहीं है। सभी वर्गों के लोग इसका पालन कर नैतिक मूल्यों के शिखर तक पहुँच सकते हैं।

परंपरा नहीं, प्रयोग

हमने सरदारशहर से जयपुर की यात्रा की। वह प्रथम अणुव्रत यात्रा थी। उस यात्रा को इस नाम से चर्चित नहीं बनाया जा सकता। फिर भी यह माना जा सकता है कि यात्रा अणुव्रत के विस्तार की आधारभूमि बनी। उस यात्रा में हमारी बहुत कसौटियां हुईं। अन्य संप्रदायों के लोगों ने आरोप लगाया कि ये सब तो तेरापंथी बनाने का षड्यंत्र कर रहे हैं। अंतरंग विरोध के स्वरों में एक बात प्रमुख थी कि ये अणुव्रत के नाम से धार्मिकों और अधार्मिकों को एकमेक कर रहे हैं। हमने दोनों स्तरों पर लोगों को समझाने का प्रयास किया। धीरे-

धीरे विरोध के स्वर खोते चले गये। आज अणुव्रत राष्ट्रीय कार्यक्रम के रूप में अपनी पहचान बना चुका है।

अणुव्रत ने लोगों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। उस समय अनेक प्रश्न सामने आये। एक प्रश्न था – ''क्या अणुव्रती बनने के लिए आपको नमस्कार करना जरूरी है? क्या आपको गुरु रूप में स्वीकार करना जरूरी है?'' अणुव्रत के साथ ऐसी कोई अनिवार्यता नहीं है। नमस्कार करना और गुरु मानना – ये परंपरा की बातें हैं। अणुव्रत परंपरा नहीं, प्रयोग है। इसी कारण इसमें जीवन-शुद्धि या व्यवहार-शुद्धि पर बल दिया गया है।

घेरे में क्यों?

कुछ लोग मुझे कहते हैं – ''आचार्यजी! आप व्यापक दृष्टिकोण की बड़ी-बड़ी बातें करते हैं और एक घेरे में रहते हैं। ऐसा क्यों करते हैं? आपको जैन धर्म और तेरापंथ से मुक्त होकर काम करना चाहिए।'' मैं उन लोगों से कहता हूँ – ''जैन धर्म और तेरापंथ में मेरी संपूर्ण आस्था है। इन्हें छोड़ने की बात मैं सोच ही नहीं सकता। इस आस्था को जीते हुए भी मैं व्यापक दृष्टि से काम करने के लिए अभ्यस्त हूँ। अणुव्रत, प्रेक्षाध्यान और जीवन विज्ञान व्यापकता के ही प्रतीक हैं। ये ऐसे कार्यक्रम हैं, जिनका लाभ हर किसी को मिल सकता है।''

हमने संपूर्ण मानव जाति के चारित्रिक उन्नयन की दृष्टि से अणुव्रत आंदोलन चलाया। यद्यपि हमने दावा कभी नहीं किया कि हम अणुव्रत के द्वारा संसार को बदल देंगे, पर यह दावा अवश्य कर सकते हैं कि अणुव्रत एक सार्वभौम और सामाजिक उपक्रम है। यह सबके लिए उपयोगी बन सकता है। इसका एक प्रमाण यह है कि अणुव्रत के विरोध में उठने वाले स्वर खो गये हैं। आज अणुव्रत को राष्ट्रीय चरित्र-निर्माण की दिशा में अमोघ साधन के रूप में स्वीकार किया जा रहा है।

आज भी प्रासंगिक है नीतिकाव्य

कृष्ण बिहारी पाठक, करौली

जगत-व्यवहार के संचालन में नीति, न्याय की आवश्यकता और औचित्य सदैव रहे हैं और बराबर रहेंगे। यहाँ तक कि दूसरों के प्रति अन्याय और अनीतिपूर्ण आचरण करने वाले भी स्वयं के प्रति नीतिसंगत आचरण की प्रत्याशा रखते हैं।

सृष्टि की स्वाभाविक प्रकृति, क्रियाएं और अवयव मौलिकता से संचालित हैं, इसलिए नीति कविता अपनी आधार सामग्री प्रकृति से ग्रहण करती आयी है। रचनाकारों ने अपने कथन के प्रमाण में प्राकृतिक अवयवों को सामने रखा तो इसका पहला कारण यह था कि प्राकृतिक अवयव अपना मौलिक स्वभाव इतनी आसानी से नहीं छोड़ते-बदलते, इसलिए उनकी कसम खायी जा सकती है, उनकी नजीर दी जा सकती है। दूसरे यह कि प्राकृतिक अवयव सार्वजनिक और सार्वभौमिक अनुभव से जुड़े होते हैं।

आज के जटिल, दुर्विनीत और आत्मकेंद्रित समय में जब नैतिकता के मापदंड कुछ धुंधले-से पड़ गये हैं, हमें ऐसे साहित्य के अनुशीलन की आवश्यकता है जो जीवन के अनुभवों के बीच सिरजा गया हो, जो मौलिक और चिरंतन हो। तकनीकी और विज्ञान के इस युग में निस्संदेह हमने भौतिक क्षेत्रों में उन्नति और उत्कर्ष का स्पर्श किया है परंतु हमारे जीवन के नैतिक, सामाजिक और भावात्मक आयाम कमतर रह गये हैं। विडंबना यह है कि इस कमतरी के प्रति अभी सार्वजनिक स्वीकृति का भाव और सहमति भी उस रूप में नहीं बन सकी है कि वह चर्चा, चिंतन और समाधान के मार्ग ढूंढ़ने की इच्छा जगाये। सुखद है कि भारतीय साहित्य इस दिशा में आशा जगाता है। भारतीय साहित्य में उपस्थित समृद्ध नीति कविता आज भी प्रासंगिक है।

महाकवि गंग जो कवियों में सुकवि और सुकवियों के भी सरदार कहे जाते हैं तो इसका सबसे बड़ा कारण यही है कि उनकी कविता जीवन मूल्यों में रची-बसी है। यह नैतिकता के आचरण की तो बात करती ही है, उन संभावनाओं को भी रेखांकित करती है जहाँ नैतिकता के उल्लंघन या पतन की शुरूआत होती है। वे बार-बार ध्यान दिलाते हैं कि पेट की भूख कभी भी हमारी नैतिकता को डिगा सकती है, अत: इसके प्रति सावचेत रहना चाहिए -

सूँघन बास को नाक दई, अरु आँख दई जग जोवन कों।
दान के काज दिये दोऊ हाथ, सो पाँउ दिये पृथी घूमन कों।
कान दिये सुनिबे कों पुरान, सु जीभ दई भज मोहन कों।
गंग कहै सब नीको दियो, पर पेट दियो पत खोवन कों।।

पेट की भूख या पेट की आग जो न कराये, वह थोड़ा है। तो क्या भूख से हार मान ली जाये? नहीं ! नीति कविता भूख की अनिवार्यता के विरुद्ध नैतिकता पर कायम रहने की बात करती है। नैतिकता के पथ पर भूख से संभावित खतरों के प्रति सावचेत करना नीति काव्य का काम है। नीति कविता में रचनाकार अपने जीवन अनुभवों के साथ-साथ जगत के अनुभवों को भी समाहित करते हैं। करणीय-अकरणीय का विवेक सिखाती ये पंक्तियां आज भी उतनी ही प्रासंगिक हैं जितनी रचना के समय थीं और आगे भी रहेंगी। 'अजानत नीर में ना धँसिये' मुख्यार्थ और व्यंग्यार्थ दोनों दृष्टियों से कितना अर्थसमृद्ध प्रयोग है -

बाल से ख्याल बड़े से विरोध अगोचर नार से ना हँसिये।
अन्न से लाज अगिन्न से जोर अजानत नीर में ना धँसिये।
बैल को नाथ घोड़े को लगाम मतंग को अंकुश में कसिये।
गंग कहै सुन शाह अकब्बर कूर तें दूर सदा बसिये।।

कवि ने सलाह दी है कि अन्न से लाज नहीं अर्थात् खाने में शर्म नहीं करनी चाहिए। कवि परंपरा में निंदक को पास रखने की छूट भले ही दी गयी हो परंतु क्रूर व्यक्ति से तो सदैव दूर ही रहना श्रेयस्कर है। क्रूर या नीच व्यक्ति अंतत: अपनी

नीचता का त्याग नहीं करता, नहीं करना चाहता। गंग कवि ने नीच व्यक्ति की नीचता नहीं त्यागने की प्रवृत्ति को समझाने के लिए लहसुन का बिंब प्रस्तुत किया है –

लैहसुन गाँठ कपूर के नीर में, बार पचासक धोइ रंगाई।
केसर के पुट दै-दै कै फेरि, सु चंदन बृच्छ की छाँह सुखाई।
मोगरे माहिं लपेटि धरी गंग, बास सुबास न आव न आई।
ऐसेहि नीच कों ऊँच की संगति, कोटि करौ पै कुटेव न जाई।।

नैतिकता, सहकार, सामाजिकता और सौजन्य से जुड़ी अनगिनत बातें गंग के नीतिकाव्य की शोभा हैं। कहीं लघुमानव और साधारणता का महत्व बनाने का उदात्त संस्कार है तो कहीं परिवार, समाज और परिवेश में आत्मीय संबंधों की गर्माहट और ताजगी को बचाये रखने की सीख। ऐसे साहित्य के अनुशीलन की महती आवश्यकता है जो हमारी मानवीय संवेदनाओं, संवेगों की सुरुचि और सुकुमारता को बचा सके, संवार सके, सहेज सके। गंग का नीति काव्य ऐसा ही साहित्य है।

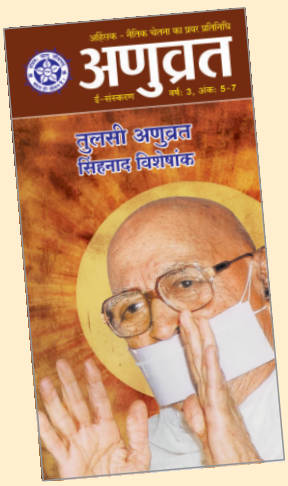

अणुव्रत विश्व भारती

की एक अभिनव पहल

अणुव्रत पत्रिका

ई-संस्करण

नि:शुल्क पत्रिका प्राप्त करने के लिए दिये गये व्हाट्सएप के चिह्न का स्पर्श कर अपना संदेश हमें भेज सकते हैं।

पत्रिका नियमित भेजने के लिए आपका मोबाइल नंबर हमारी सूची में स्वचलित रूप से पंजीकृत हो जाएगा।

मौन की भाषा

■ प्रकाश तातेड़, उदयपुर ■

अब समझ में आयी जीवन की परिभाषा,
जितनी कम होगी मन की अभिलाषा,
उतनी ही अधिक है जीने की आशा,
फिर क्यों फैली है सर्वत्र निराशा।

अब भी वक्त है बढ़ाओ जिज्ञासा,
मत दो मन को कोई झूठा दिलासा,
क्या रिश्तों को माना मात्र तमाशा,
फिर से जगाना प्यार का भरोसा।

श्रम से ही मिलता खुशी का बताशा,
खिलखिला उठेगा हरा भरा चौमासा,
बदलेगा खेल में जीत का पासा,
तब ही सार्थक है मौन की भाषा।

अणुव्रत की बात

मनोज त्रिवेदी

हमसे जुड़ने के लिए नीचे दिये गये चिह्न पर क्लिक करें

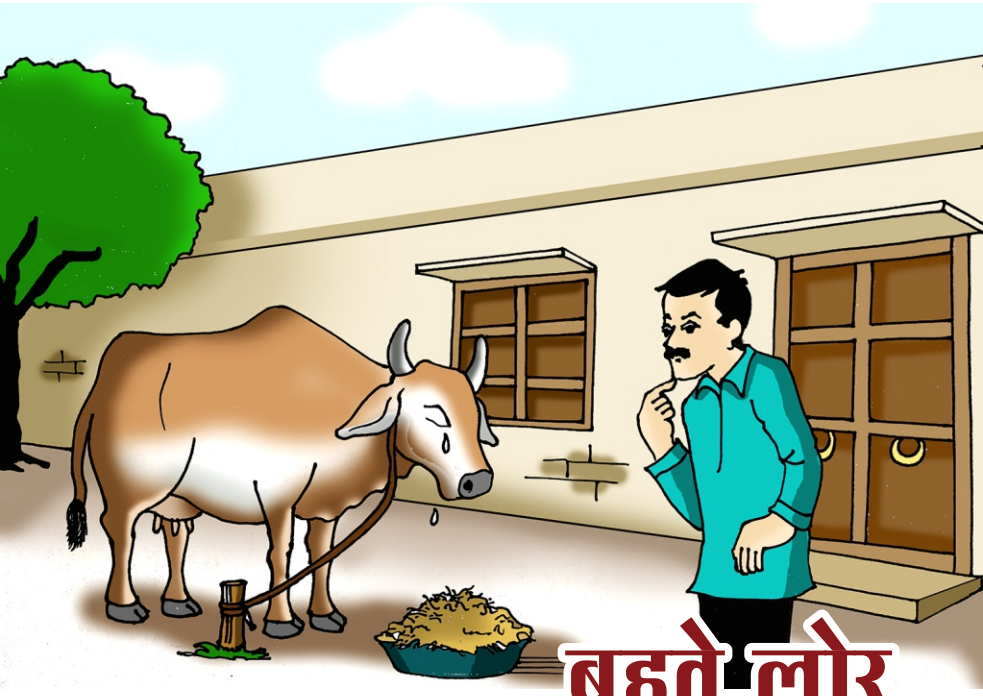

बहते लोर

श्यामल बिहारी महतो, बोकारो

खैरी गैया की आँखों से बहते लोर (आँसू) देख बासु चौंक उठा था। सुबह उसकी पत्नी ने उसे घर के बाहर एक खूँटे से बाँधकर थोड़ी-सी पुआल उसके सामने डाल दी थी जिसे खाना तो दूर, उसने सूंघा तक नहीं था। बासु का मन व्याकुल हो उठा। उसे अकस्मात अपनी माँ की याद आ गयी जिन्हें गुजरे कई बरस गुजर चुके थे। हालाँकि बासु को लगता कि आज भी माँ का वजूद घर के कोने-कोने में मौजूद है और मरने के बावजूद बेटे पर उनकी नजर है। सो आज भी बेटा अपनी माँ की पूजा करता है।

काफी समय पहले की बात है, एक दिन मैया को बेटे ने चुपके से रोते देख लिया था और वह काँप उठा था। कहाँ कमी हुई सेवा में? किस वेदना ने माँ को रुला दिया? बहुत पूछने पर भी माँ ने केवल इतना ही कहा था, ''कुछ बात नाय है बेटा, आँख में खरिका (तिनका) घुस गया था। उसी से लोरा रहा था...।'' माँ की कही बातों पर बासु को

जरा भी यकीन नहीं हुआ था। उसे लगा, माँ उससे कुछ छिपा रही हैं। बासु रोजाना आठ बजे काम पर निकल जाता था। चलकरी के ग्रामीण बैंक में वह रोकड़िया था। उसके पीछे घर में क्या कुछ होता था, शाम को घर लौटने पर ही कुछ-कुछ वह जान पाता तो कुछ से अनजान ही रह जाता था। सो महीना भर बाद भी वह माँ के आँसुओं का सही कारण जान नहीं सका। तब उसने एक चाल चली।

माँ बिना नहाये-धोये अनाज का एक दाना भी मुँह में नहीं डालती थीं। उस दिन वह काम के नाम पर घर से निकला तो जरूर परन्तु मोटरसाइकिल गाँव के पोस्ट ऑफिस के सामने खड़ी कर वापस आ गया और पिछवाड़े वाले रास्ते से घर में चुपके से समा गया। उसका अंदेशा सही निकला। माँ को बासी रोटी-सब्जी खाते देखा तो उसका पूरा वजूद हिल उठा।

बासु जब आठ-दस साल का था, तभी बाहर मजदूरी करने गये बाप को एक ट्रक ने कुचल दिया था। दूसरों के खेत-खलिहानों में काम कर माँ ने उसे पढ़ाया-लिखाया था। वह खुद नहीं खातीं, पर बेटे को कभी भूखा सोने नहीं देती थीं। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उसने कभी माँ को रोते हुए नहीं देखा था। उसी माँ को बासी खाना देकर आरती ने जैसे पहाड़-सा गुनाह कर दिया था। उस दिन अचानक बेटे को सामने पाकर माँ भी मुँह चलाना भूल गयीं। उन्हें भक्क मार दिया था।

''आरती...आरती...!'' बासु चीखा था।

''क्या हुआ? आप तो काम पर गये थे। कब लौट आये...?''

''मैं पूछता हूँ रात का बचा हुआ यह खाना कब से माँ को दे रही हो जबकि तुम्हें मालूम है कि इन्हें गठिया रोग है और डॉक्टर ने इन्हें बासी चीजें खाने से मना किया हुआ है...।''

आरती ने कोई जवाब नहीं दिया। उसे तत्काल कोई उत्तर नहीं सूझा। वह निरुत्तर खड़ी रही।

आरती को अपनी गलती का एहसास हुआ। उसकी आँखों में आँसू आ गये। इससे पहले कि सावित्री महतवाईन कुछ बोलें, आरती ने आगे आकर कहा - ''सॉरी बासु, मैं डॉक्टर वाली बात भूल गयी थी। आगे से ऐसी गलती नहीं होगी। आई प्रोमिस...!''

''आरती! माँ के बगैर मैं जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकता। माँ की आँखों में आँसू...मैं देख नहीं सकता।''

''बासु, मुझे क्षमा कर दो।'' आरती बासु से लिपट गयी।

माँ बोलीं, ''रहने दो न बेटा, इसमें बहू का कोई दोष नहीं है। जो बच जाता था, वो फेंका न जाये सो कभी-कभार खा लेती थी।'' इस पर बासु ने पत्नी को समझाते हुए कहा, ''अब उतनी ही रोटी-सब्जी बनाओ जितने में हम तीनों का पूरा हो जाये।'' ...और इस तरह मामले का पटाक्षेप हो गया।

सावित्री महतवाईन की तरह खैरी गैया भी बासु के जीवन में अहम स्थान रखती थी। लगातार ढाई साल से वह दूध देती चली आ रही थी। सुबह-शाम दोनों टाइम। पिछले माह से वही खैरी गैया दूध देना बंद कर दी थी। ...और ठीक उसके चार दिन बाद ही उसकी बेटी भूतनिया ने एक बछड़े को जन्म दिया। फिर क्या, आरती ने उसकी पगहा और जगह दोनों बदल दी। जहाँ पहले खैरी गैया बँधकर लपसी और कुट्टी खाया करती थी, अब उसकी जगह और खान-पान भूतनिया ने हथिया ली। खैरी गैया को बाहर जाना पड़ा। तभी से खैरी गैया उदास-उदास रहने लगी थी। चरने भी जाती तो बाकियों को उधर ही छोड़कर अकेले घर लौट आती थी। दरवाजे के बाहर खड़ी होकर टुकुर-टुकुर ताकती रहती और मन ही मन रोती रहती। परन्तु उसका रोना घर में किसी को नहीं दिखता। अगर बासु घर में होता तो तुरंत उसे नमक-पानी पीने को मिल जाता। वह एक ही साँस में सारा पानी पी जाती और बासु के हाथ खुशी-खुशी चाटने लगती थी। यह सब बासु को

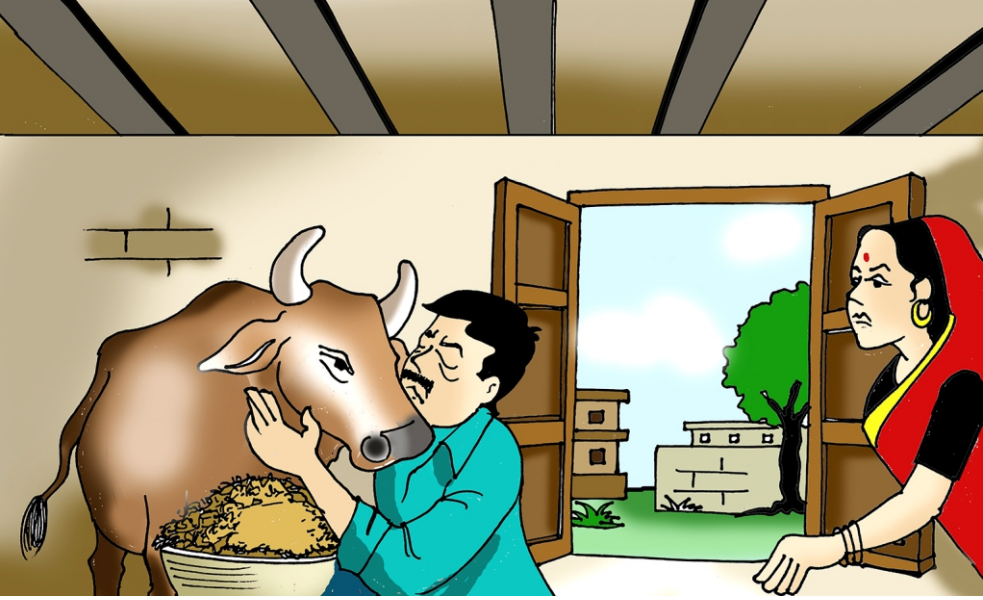

बहुत अच्छा लगता। खैरी गैया के प्रति बासु का लगाव माँ जैसा ही था, लेकिन बासु हर वक्त घर में नहीं होता। ऐसे में खैरी गैया की आँखें अक्सर बासु को ढूंढ़तीं, लेकिन न पाकर वह निराश हो जाती थी।

थोड़ी देर बाद आरती भी बाहर गयी और खैरी गैया के बहते आँसू देख आयी। उसने बासु से कहा, ''सचमुच खैरी गैया रो रही है! पुआल तो उसने खाया ही नहीं...!''

बासु को लगा, बाहर खैरी गैया नहीं, उसकी माँ रो रही हैं। माँ की कही बात उसे याद आने लगी - ''माय और गाय को कभी रुलाना नहीं, बड़का जबर हाय लगेगा...!''

खैरी गैया में बासु को माँ चेहरा दिखने लगा। वह बाहर की ओर दौड़ पड़ा। खैरी गैया ने डबडबायी आँखों से बासु को आते देखा। वह पूँछ हिलाने लगी और पैर आगे-पीछे करने लगी। बासु दौड़कर गैया से लिपट गया। वह भी रो पड़ा। उसने झट से गैया को बंधन मुक्त कर दिया और घर ले आया। पहले उसने एक तसले में कुट्टी डाला, फिर मकई की लपसी उसमें डालकर मिला दी। खैरी गैया मजे से उसे खाने लगी। उसका बहता लोर और भी बहने लगा। यह खुशी का लोर था। बासु अपनी झिलमिलाती आँखों में खैरी गैया के रूप में अपनी माँ को देख रहा था।

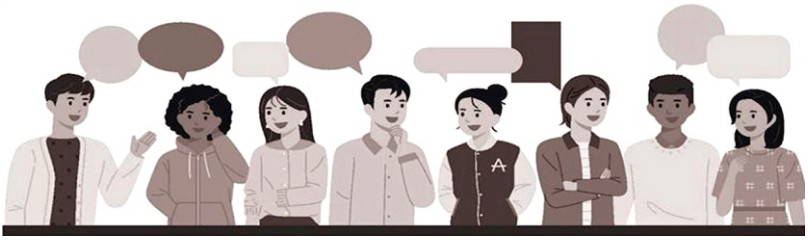

विगत की समीक्षा और आगत का सम्मान

परिचर्चा के इस विषय पर पाठकों से प्राप्त चिंतन बिंदु -

संपूर्ण क्षमता से जुटना होगा

अतीत सदैव हमें भविष्य को देखने की दृष्टि प्रदान करता है। तो क्यों न इस दृष्टि का लाभ उठाकर अतीत की भूलों को सुधार लें। आने वाले वक्त के लिए क्या लक्ष्य तैयार किये हैं? ये कितने उपयोगी हैं? कितने समय की माँग वह लक्ष्य करता है? उतना समय उसके लिए सुरक्षित रखें। फिर पूरी ईमानदारी और अपनी संपूर्ण क्षमता के साथ जुट जाएं उस लक्ष्य को पूरा करने में।

– **डॉ. लता अग्रवाल 'तुलजा'**, भोपाल

अणुव्रत के सिद्धांतों को आचरण में उतारें

विगत से हमने सीखा है कि गति तभी सार्थक है जब उसमें संयम हो और विकास तभी टिकाऊ है जब उसमें मानवीयता का स्पर्श हो। आगत का सम्मान तभी संभव है जब हम आत्मचिंतन से प्रेरित होकर अणुव्रत के सिद्धांतों को आचरण में उतारें। अतीत हमारा शिक्षक है और भविष्य हमारा अवसर। इन दोनों का संतुलन ही सच्चा जीवन-सौंदर्य है। – **अशोक मांडोत**, अहमदाबाद

अतीत की सीख से तय होगी भावी दिशा

अतीत से मिली शिक्षा तभी सार्थक है जब वह हमारे वर्तमान कर्म और व्यवहार में प्रतिबिंबित हो। आने वाले कल का स्वागत आशा, विश्वास और कर्मनिष्ठा के साथ

करना ही प्रबुद्ध, प्रगतिशील और सार्थक जीवन-दृष्टि का प्रतीक है। हमें चाहिए कि अपने अच्छे अनुभवों को केवल स्मृति में न संजोएं, बल्कि उन्हें जीवन की निरंतर प्रेरणा बनाएं क्योंकि वही अनुभव भविष्य को आलोकित करने वाले हैं। – **डॉ. कैलाश चन्द सैनी**, जयपुर

समता का भाव जगाना होगा

पिछले वर्षों में भारत ने चंद्रमा पर सफलतापूर्वक अंतरिक्ष यान उतार कर झंडा गाड़ दिया है। आने वाले समय में हमें चंद्रमा पर अंतरिक्ष यात्रियों को भी उतारना है। वहीं मोबाइल से जो ठगी हो रही है, उसे रोकने की दिशा में भी कुछ करना होगा। बच्चों को बचपन जीने का हक देना होगा, शिक्षा को रोजगारपरक बनाना होगा। सभी धर्मों के संतों को आमजन में समता का भाव जगाना होगा। क्षमा और सहनशीलता के गुण अपनाने के लिए प्रेरित करना होगा। – **पारस चन्द जैन**,देवली

नौनिहालों की परवरिश पर ध्यान देना होगा

राह से भटके बच्चे, डिप्रेशन में जाते हुए बच्चे, नारी का अपमान करते बच्चे, यह सब हमारी ही भूलों की परिणति हैं। इस परिदृश्य को यदि बदलना है तो हमें नौनिहालों की परवरिश पर विशेष ध्यान देना होगा। इसके लिए जरूरी है कि हम अपना आचरण अनुकरणीय बनाएं। यदि हम ऐसा कर सके तो आने वाली पीढ़ी सुसंस्कारित और देशप्रेम से ओतप्रोत होगी। – **नीलम राकेश**, लखनऊ

निरंतर आगे बढ़ने के लिए स्वयं को तैयार करें

हर पल का उपयोग कर जीवन को सफल बना पाना तभी संभव है जब इंसान अपने प्रयासों और लक्ष्य को समय-समय पर वक्त की कसौटी पर कसे, कमियों को दूर करे तथा उचित निर्णय लेने की क्षमता के साथ अपने निश्चय पर अडिग रहते हुए निरंतर आगे बढ़ने के लिए स्वयं को

तैयार करे। आगत वर्ष का संकल्प यही होगा कि कुछ ऐसे खूबसूरत पल जोड़ें जो हमारी अपनी धरोहर तो बनें ही, दूसरों के लिए भी दृष्टांत बनें। – **सुधा आदेश**, बेंगलुरु

करुणा, सह-अस्तित्व, समानता ही सच्ची पूँजी

करुणा, सहयोग, सह-अस्तित्व, समानता ही मानवता की सच्ची पूँजी हैं। इसके साथ ही हमें डिजिटल उपकरणों का बुद्धिमानी से उपयोग करना होगा। आगत का सम्मान करने का अर्थ है सक्रियता, तैयारी और कृतज्ञता। प्रतिदिन कुछ समय आत्म-चिंतन, सत् साहित्य पठन, प्रेक्षाध्यान के लिए निकालना, ताकि जीवन में शांति और स्पष्टता बनी रहे। – **स्वरूप चन्द दाँती**, चेन्नई

आगामी परिचर्चा का विषय

क्या हों हमारी प्राथमिकताएँ?

☐ आने वाले 25 वर्षों के लिए क्या हों हमारी प्राथमिकताएं?

☐ एक देश के रूप में! परिवार के रूप में! व्यक्ति के रूप में !

☐ स्वयं को केंद्र में रखकर क्या सोचते हैं आप इन मुद्दों के बारे में?

☐ वही लिखें जो आने वाले वर्षों में आप अपनी प्राथमिकता बनाने जा रहे हैं?

'अणुव्रत पत्रिका' के फरवरी 2026 अंक में प्रकाशित होने वाली परिचर्चा के लिए इन्हीं चिंतन बिंदुओं पर अपने सारगर्भित व अनुभवजन्य विचार हमें अधिकतम 200 शब्दों में 10 जनवरी 2026 तक निम्न व्हाट्सएप नंबर के माध्यम से लिख भेजिए।

9116634512

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी

के 100 वें दीक्षा दिवस

एवं पावन जन्म की 111 वर्षीय परिसंपन्नता पर

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी की

अनुपम प्रस्तुति

पुनः पुनः पठनीय और संग्रहणीय

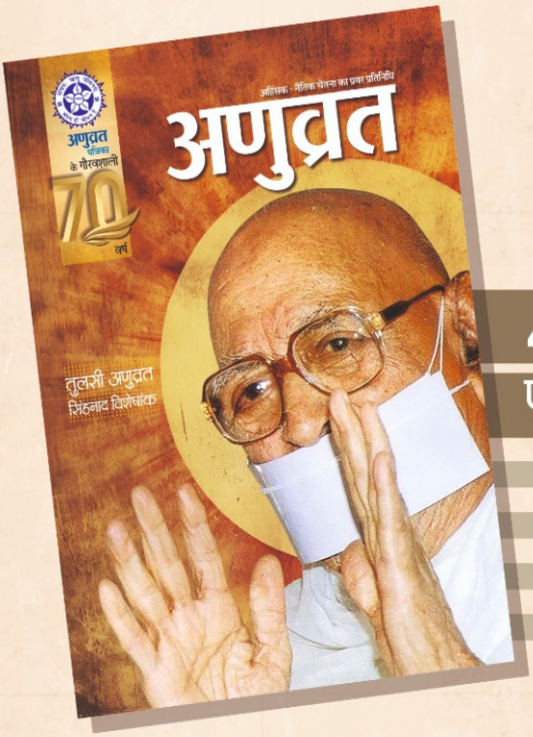

488 पृष्ठ

अणुव्रत
तुलसी
सिंहनाद
विशेषांक

विशिष्टताएं

आचार्य तुलसी से जुड़े 111 ऐतिहासिक प्रसंग ■ चित्र वीथिका ■ तुलसी अणुव्रत काव्य सुधा
अणुव्रत उद्घोष ■ कृतज्ञ भाव और संस्मरण ■ अणुव्रत पत्रिका का सफरनामा

अपनी प्रति मँगवाने के लिए संपर्क करें

+919116634512 ■ anuvrat.patrika@anuvibha.org

मानवता को अणुव्रत का शांति संदेश

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण का 14 वर्ष बाद अणुविभा मुख्यालय में पदार्पण

राजसमंद। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण का 1 दिसंबर को अणुविभा मुख्यालय 'चिल्ड्रन'स पीस पैलेस' में पदार्पण हुआ। अणुव्रत अनुशास्ता का इस केन्द्र पर 14 वर्ष बाद पदार्पण विशेष महत्व रखता है। अणुव्रत के इस मुख्यालय से दुनिया को अणुव्रत का शांति संदेश देते हुए आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि दुनिया में हिंसा और युद्ध की स्थितियां बनी हुई हैं, वे खत्म हों और भविष्य में ऐसी स्थितियां न बनें, यह आवश्यक है। बातचीत और समझौता किसी भी समस्या का अहिंसक समाधान हो सकते हैं। अणुव्रत अहिंसा की बात करता है। अहिंसा के द्वारा हिंसा को निरस्त किया जा सके और बलहीन बनाया जा सके, यह प्रयास अपेक्षित है।

इस अवसर पर देश के विभिन्न भागों से समागत अणुव्रत कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने कहा,

''पहले भी हमारा आना यहाँ हुआ है लेकिन एकीकरण के बाद समृद्ध और विराट संस्था बनने के बाद पहली बार हमारा यहाँ आना हुआ है। अणु की भाँति यह परिसर छोटा हो सकता है लेकिन यहाँ बहुत कुछ देखने को मिला। विद्यार्थियों के लिए तो यह केंद्र उपयोगी है ही, बड़ों के लिए भी उपयोगी है। मुझे यह केंद्र अच्छा लगा, सुन्दर और उपयोगी लगा। अपने घर-परिवार से दूर रहकर अणुव्रत के कार्यकर्ता जो अपना समय लगाते हैं, उनका आध्यात्मिक उत्साह बना रहे और अणुव्रत का कार्य आगे बढ़ता रहे।''

इससे पूर्व आचार्यश्री ने तुलसी अणुव्रत दर्शन दीर्घा के नवीनीकृत स्वरूप सहित बालोदय दीर्घाओं का अवलोकन किया। आचार्यश्री के सान्निध्य में अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने नव निर्मित 'अणुविभा विरासत दीर्घा' का उद्घाटन किया। इस दीर्घा में अणुविभा की स्थापना और क्रमिक विकास की चित्रात्मक झाँकी प्रस्तुत की गयी है। साथ ही अणुव्रत दर्शन का परिचय और अणुव्रत आंदोलन की ऐतिहासिक जानकारी 90 पैनल्स में आकर्षक तरीके से प्रस्तुत की गयी है।

आचार्यश्री के साथ साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा, मुख्यमुनिश्री महावीर कुमार, साध्वीवर्याश्री संबुद्धयशा, अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार

सहित अनेक साधु-साध्वियों ने बालोदय दीर्घाओं का अवलोकन किया।

इस अवसर पर अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष संचय जैन, निवर्तमान अध्यक्ष अविनाश नाहर, उपाध्यक्ष डॉ. विमल कावड़िया, विनोद कोठारी, संगठन मंत्री पायल चौरड़िया, संयुक्त मंत्री जगजीवन चौरड़िया, डॉ. सीमा कावड़िया, राजकरण दफ्तरी, विनोद बच्छावत, गणेशलाल कच्छारा, उमेन्द्र गोयल आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा महामंत्री मनोज सिंघवी ने किया।

पदयात्रा के मार्ग में विद्यालयी बच्चों ने विभिन्न बालोदय प्रवृत्तियों की नाटक शैली में रोचक प्रस्तुति दी।

अणुविभा मुख्यालय में पदार्पण के अवसर पर अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन उद्‌गार सुनने के लिए वीडियो पर क्लिक करें...

अहिंसा, संयम और नैतिकता का आचरण जरूरी - आचार्य श्री महाश्रमण

76वाँ अणुव्रत अधिवेशन आयोजित

कोबा (अहमदाबाद)। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में प्रेक्षा विश्व भारती में 76वें अणुव्रत अधिवेशन का आगाज 6 सितम्बर को हुआ। प्रथम दिवस अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने अणुव्रत ध्वज फहराया।

अणुव्रत अनुशास्ता ने उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कहा कि जीवन में अहिंसा, संयम और नैतिकता का आचरण जरूरी है। हमारी चर्या में संयम घुल-मिल जाना चाहिए। उन्होंने सभी को बोलने, चलने और आहार में संयम रखने की प्रेरणा दी। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा ने अणुव्रत आंदोलन में महिलाओं की बढ़ती हुई संख्या पर प्रसन्नता व्यक्त की। साध्वीवर्याश्री सम्बुद्धयशा ने नशामुक्ति के क्षेत्र में सघन कार्य करने की अपेक्षा जतायी।

अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने देशभर से आये कार्यकर्ताओं का स्वागत करते हुए अवगत कराया कि वर्तमान में देश और विदेश में 241 अणुव्रत समितियां और मंच कार्यरत हैं। पूज्यप्रवर के मंगल आशीर्वाद से आचार्य तुलसी द्वारा प्रदत्त अणुव्रत का अवदान जन-जन तक पहुँच रहा है। वर्ष 2024-25 में किये गये कार्यों के संबंध में 92

अणुव्रत समितियों के प्रतिवेदन प्राप्त हुए हैं। महानगर श्रेणी में प्रथम - अणुव्रत समिति जयपुर, द्वितीय - मुम्बई और तृतीय - ग्रेटर सूरत, नगर श्रेणी में प्रथम - फरीदाबाद, द्वितीय - भीलवाड़ा, तृतीय - गाजियाबाद, उदयपुर, शहर श्रेणी में प्रथम - चूरू, द्वितीय - भुज, तृतीय - पाली, राजसमंद तथा अणुव्रत मंच में प्रथम - असाड़ा, द्वितीय - गंगापुर व तृतीय स्थान पर अणुव्रत मंच प्रतापगढ़ रहे। अणुविभा महामंत्री मनोज सिंघवी ने वर्ष भर में अणुव्रत समितियों द्वारा किये गये कार्यों व उपलब्धियों की जानकारी प्रस्तुत की।

अधिवेशन का प्रथम सत्र प्रतिभागियों के पारस्परिक परिचय से प्रारंभ हुआ। अणुविभा के प्रबंध न्यासी तेजकरण सुराणा ने कार्यकर्ताओं को व्यवसाय और व्यवहार में नैतिकता और प्रामाणिकता रखने का आह्वान किया। पूर्व अध्यक्ष संचय जैन ने कहा कि आर्थिक शुचिता से अणुव्रत समितियां एक विशिष्ट पहचान कायम कर सकती हैं। उन्होंने 'अणुव्रत' और 'बच्चों का देश' पत्रिकाओं के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार का भी आग्रह किया। निवर्तमान अध्यक्ष अविनाश नाहर ने अणुव्रत समितियों को केन्द्र द्वारा दिये गये निर्देशों का अनुसरण करने के लिए प्रेरित किया।

द्वितीय सत्र में मुनिश्री योगेशकुमार ने कहा कि संगठन को अधिक मजबूत बनाने के लिए कार्यकर्ताओं का समन्वय क्षीर और नीर जैसा होना चाहिए। मुनिश्री कुमारश्रमण ने कहा कि कार्यकर्ताओं के आचार-विचार और व्यवहार में अणुव्रत दिखना चाहिए। प्रथम दिन के अंतिम सत्र में देशभर की 35 समितियों द्वारा वर्ष भर में किये गये कार्यों

की पीपीटी और वीडियो के साथ ही मौखिक प्रस्तुतियां दी गयीं।

7 सितम्बर को अधिवेशन के द्वितीय दिन का आगाज अणुव्रत रैली से किया गया। इसके बाद प्रथम सत्र में अणुव्रत के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनिश्री मननकुमार ने कार्यकर्ताओं से नाम, पद और प्रतिष्ठा की परवाह किये बिना कार्य करने और अणुव्रत की गरिमा बढ़ाने का आह्वान किया। द्वितीय सत्र में पर्यावरण प्रकल्प संयोजिका डॉ. नीलम जैन, जीवन विज्ञान संयोजक रमेश पटावरी, अणुव्रत प्रबोधन प्रतियोगिता संयोजक अशोक चौरड़िया, अणुव्रत गीत महासंगान पर्यवेक्षिका डॉ. कुसुम लुनिया, नशामुक्ति प्रकल्प पर्यवेक्षक मनोज सिंघवी, एसीसी संयोजक राजेश चावत और मीडिया संयोजक पंकज दुधोड़िया ने अपनी-अपनी प्रस्तुति दी।

इसके बाद हुई अणुविभा की वार्षिक साधारण सभा में अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ ने सदस्यों का अभिनंदन और आभार व्यक्त किया। महामंत्री मनोज सिंघवी ने वार्षिक प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जिसका सदन द्वारा सर्वसम्मति से अनुमोदन किया गया। वार्षिक आय-व्यय लेखों का विवरण सहमंत्री उमेन्द्र गोयल ने प्रस्तुत किया, जिसे सदन ने सर्वसम्मति से पारित किया। अंतिम सत्र में देशभर से आयी 36 समितियों ने वर्ष भर में किये गये कार्यों की प्रस्तुति दी। 8 सितम्बर को अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के प्रेरणा पाथेय के साथ अधिवेशन संपन्न हो गया।

भीखमचंद नखत को अणुव्रत गौरव सम्मान

कोबा (गांधीनगर)। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण की मंगल सन्निधि में 24 अक्टूबर को अणुविभा द्वारा वर्ष 2025 का 'अणुव्रत गौरव सम्मान' समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ व अन्य पदाधिकारियों ने अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष अणुव्रत सेवी भीखमचंद नखत को 'अणुव्रत गौरव सम्मान' प्रदान किया। आचार्यश्री ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा के महामंत्री मनोज सिंघवी ने किया।

रघुवीर चौधरी को अणुव्रत लेखक पुरस्कार

अणुव्रत लेखक मंच के सम्मेलन के दौरान वर्ष 2025 का अणुव्रत लेखक पुरस्कार पद्मश्री रघुवीर चौधरी को दिया गया। आचार्यश्री ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। उनके प्रशस्ति पत्र का वाचन अणुविभा की उपाध्यक्ष डॉ. कुसुम लुनिया ने किया। रघुवीर चौधरी ने कृतज्ञ भाव अभिव्यक्त किये। अणुव्रत लेखक मंच के संयोजक जिनेन्द्र कोठारी ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

प्यारचंद मेहता को जीवन विज्ञान पुरस्कार

अणुविभा द्वारा प्यारचंद मेहता को जीवन विज्ञान पुरस्कार प्रदान किया गया। उनके प्रशस्ति पत्र का वाचन अणुविभा के उपाध्यक्ष कैलाश बोराणा ने किया। मेहता ने अपने कृतज्ञ भावों की अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा के महामंत्री मनोज सिंघवी ने किया। बैंकॉक प्रवासी हरेन जैन ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। राजस्थान के पूर्व विधायक सतीश पूनिया ने आचार्यश्री के दर्शन कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया।

अणुविभा का महत्वपूर्ण मासिक प्रकाशन

नवीनतम अंक पढ़ने के लिए पुस्तक के चिह्न पर क्लिक करें..

बच्चों का देश

राष्ट्रीय बाल मासिक

अब बढ़े हुए पृष्ठों के साथ!

हिन्दी के साथ-साथ अब बच्चों को पढ़ने को मिलेगी अंग्रेजी भाषा में भी कहानियाँ।

देशभर में अणुव्रत क्रिएटिविटी कॉन्टेस्ट का सफल आयोजन

राष्ट्रीय संयोजक राजेश चावत की रिपोर्ट

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन आशीर्वाद से मुनिश्री मनन कुमार के आध्यात्मिक पर्यवेक्षण में अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा ''संविधान की धार - मर्यादा का हो आधार'' विषय पर देश के 20 से भी अधिक राज्यों में एसीसी 2025 का आयोजन राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़ के नेतृत्व में किया गया। इसमें कक्षा 5 से 12 तक के 50 हजार से अधिक विद्यार्थियों ने गीत गायन, निबंध लेखन, चित्रकला, कविता एवं भाषण प्रतियोगिताओं में अपनी रचनात्मक प्रतिभा एवं कल्पनाशीलता का शानदार प्रदर्शन किया। सभी प्रतिभागियों को डिजिटल सर्टिफिकेट भेजे गये।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण के पावन सान्निध्य में कोबा (अहमदाबाद) में 9 व 10 सितम्बर को राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन हुआ। मुख्य अतिथि केन्द्रीय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल की उपस्थिति देश के कोने-कोने से आये 350 राज्य स्तरीय विजेता विद्यार्थियों में जोश का संचार कर रही थी। राष्ट्रीय स्तर के विजेताओं को मुख्य अतिथि एवं अणुविभा अध्यक्ष तथा अणुविभा टीम ने आकर्षक पुरस्कार प्रदान किये। एसीसी-2025 में प्रभारी उपाध्यक्ष डॉ. कुसुम लुनिया के मार्गदर्शन में महामंत्री मनोज सिंघवी तथा अणुविभा परिवार व अणुव्रत समितियों का सहयोग प्राप्त हुआ।

अणुव्रत का खूब अच्छा प्रसार करने का प्रयास हो : आचार्य श्री महाश्रमण

अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह में आयोजनों से माहौल अणुव्रतमय

कोबा, गांधीनगर। प्रतिवर्ष की भाँति इस वर्ष भी देश के विभिन्न भागों में 'अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह' का व्यापक स्तर पर आयोजन किया गया। सात दिनों तक हुए वैविध्यपूर्ण कार्यक्रमों से माहौल अणुव्रतमय बन गया। मुख्य कार्यक्रम अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण की मंगल सन्निधि में प्रेक्षा विश्व भारती के वीर भिक्षु समवसरण में आयोजित हुए। 1 अक्टूबर को प्रथम दिन अणुव्रत प्रेरणा दिवस एवं अणुव्रत गीत महासंगान के रूप में आयोजित हुआ। अणुव्रत अनुशास्ता ने उपस्थित श्रद्धालुओं को पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा कि आचार्यश्री तुलसी के समय अणुव्रत को व्यापकता प्राप्त हुई। यह आन्दोलन 75 वर्ष पूर्ण कर आगे बढ़ रहा है। एक अक्टूबर से सात अक्टूबर का समय अणुव्रत के लिए मानो आरक्षित किया हुआ है। इन सात दिनों में अणुव्रत का खूब अच्छा प्रसार करने का प्रयास हो।

2 अक्टूबर को अहिंसा दिवस, 3 को सांप्रदायिक सौहार्द दिवस, 4 को पर्यावरण शुद्धि दिवस तथा 5 अक्टूबर को नशामुक्ति दिवस मनाया गया। 6 अक्टूबर को अनुशासन दिवस पर आचार्य श्री महाश्रमण ने मंगल पाथेय प्रदान

करते हुए कहा कि अणुव्रत उद्‌बोधन सप्ताह के मध्य अणुव्रत लेखक सम्मेलन भी हो रहा है। लेखन भी अपने आप में ज्ञानावरणीय कर्म का क्षयोपशम होता है। लेखक सारस्वत साधना करने वाले होते हैं। वे अच्छी सेवा के साथ व्यक्तिगत धार्मिक-आध्यात्मिक साधना को भी विकसित करते रहें, मंगलकामना।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने 7 अक्टूबर को कहा कि आज के दिन को जीवन विज्ञान दिवस के रूप में आयोजित किया गया है। कैसे जीवन जीना, कैसे श्वास लेना, कैसे बोलना आदि-आदि जीवन से जुड़ी हुई बातें जीवन विज्ञान से सीखने को प्राप्त हो सकती हैं। विद्यार्थियों को अच्छी शिक्षा के साथ-साथ अच्छे संस्कार देने का भी प्रयास हो। जीवन विज्ञान के कितने-कितने कार्यक्रम समायोजित हो रहे हैं। अणुविभा इस विषय में अच्छा ध्यान दे सकती है।

अहमदाबाद की मेयर प्रतिभा जैन ने कहा कि आपकी प्रेरणा और आशीर्वाद से हमने अहमदाबाद के सभी सरकारी विद्यालयों में प्रात:कालीन प्रार्थना के साथ अणुव्रत गीत के संगान को भी अनिवार्य किया है। आचार्यश्री ने उन्हें मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

अणुव्रत दिवस के रूप में मना अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य श्री तुलसी का जन्मदिवस

तुलसी अणुव्रत सिंहनाद विशेषांक लोकार्पित

कोबा, गांधीनगर। युगप्रधान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण की मंगल सन्निधि में 23 अक्टूबर को अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक गणाधिपति आचार्य श्री तुलसी का 112वां जन्मोत्सव आध्यात्मिक रूप में मनाया गया। आचार्य श्री तुलसी का जन्मदिवस देशभर में प्रतिवर्ष 'अणुव्रत दिवस' के रूप में समायोजित किया जाता है।

आचार्य श्री महाश्रमण ने श्रद्धालुओं को पावन पाथेय प्रदान करते हुए कहा, ''अणुव्रत दिवस आज मनाया जा रहा है। मैं गुरुदेव श्री तुलसी के प्रति श्रद्धार्पण करता हूँ, समण श्रेणी के प्रति मंगलकामना करता हूँ और अणुव्रत के प्रति प्रमोद भावना कि कार्यकर्ताओं का उत्साह बना रहे और वे यथायोग्य अणुव्रत के प्रसार का कार्य करते रहें।''

अणुविभा अध्यक्ष प्रतापसिंह दुगड़, निवर्तमान अध्यक्ष अविनाश नाहर, महामंत्री मनोज सिंघवी, 'अणुव्रत' पत्रिका के संपादक संचय जैन सहित अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने 'तुलसी अणुव्रत सिंहनाद' विशेषांक की प्रथम प्रति आचार्यश्री को समर्पित की। आचार्यश्री ने आंशिक रूप में अणुव्रत गीत का संगान किया। इस दौरान अणुव्रत पत्रिका के संपादक संचय जैन ने अपनी अभिव्यक्ति दी।

डॉ. सोहनलाल गांधी लंदन में अहिंसा पुरस्कार से सम्मानित

इंगलैण्ड की प्रमुख संस्था इंस्टीट्यूट ऑफ जैनोलॉजी द्वारा 16 अक्टूबर को लंदन के हाउस ऑफ कॉमन्स में अहिंसा दिवस का भव्य आयोजन किया गया। इंस्टीट्यूट के प्रबन्ध न्यासी डॉ. मेहूल संग्राजका ने करतल ध्वनि के बीच इस वर्ष के अहिंसा पुरस्कार के लिए भारत के प्रमुख अणुव्रत कार्यकर्ता एवं अणुविभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. सोहनलाल गांधी के नाम की घोषणा की। संस्था के द बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज ने यह अनुभव किया कि अणुव्रत आन्दोलन एवं अणुव्रत की शिक्षा को बढ़ावा देने में डॉ. गांधी ने उदाहरण प्रस्तुत किया है।

प्रशस्ति पत्र का वाचन करते हुए इंस्टीट्यूट ऑफ जैनोलॉजी के न्यासी कुमार मेहता ने कहा कि डॉ. गांधी ने आजीवन अहिंसा, शांति एवं अंतरधार्मिक समझ को बढ़ावा दिया। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ एवं अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अणुव्रत आन्दोलन की प्रभावी प्रस्तुति दी। संसद सदस्य मैट टरमेन ने डॉ. गांधी को अहिंसा पुरस्कार प्रदान किया।

डॉ. सोहनलाल गांधी ने यह पुरस्कार उन सभी को समर्पित किया जो अहिंसा के लिए प्रयासरत हैं। इस अवसर पर वेटिकन के कार्डिनल जार्ज जैकब कुवाकड का संदेश मॉन्सिग्नर सेंटियागो माइकल ने प्रस्तुत किया। आर्कबिशप निकीतास ने भी विचार रखे।

जीवन विज्ञान से हो बच्चों का नैतिक उत्थान

महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस का आयोजन जीवन विज्ञान दिवस के रूप में हुआ

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण ने 3 नवम्बर को कहा कि वि.सं. 2035 में आचार्य श्री तुलसी का चतुर्मास गंगाशहर में हो रहा था। कार्तिक शुक्ल त्रयोदशी को आचार्य श्री तुलसी ने मुनिश्री नथमलजी स्वामी टमकोर को महाप्रज्ञ अलंकरण प्रदान किया था। आज उनका यह महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस है, यह दिन जीवन विज्ञान दिवस के रूप में भी प्रतिष्ठित है। शिक्षा जगत से मुख्यतया जुड़ा हुआ यह जीवन विज्ञान का उपक्रम अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा संचालित हो रहा है। अणुविभा, अणुव्रत समितियां, हमारे साधु-साध्वियां, जैसा औचित्य हो, जैसा अवसर हो, शिक्षा संस्थानों में जीवन विज्ञान से बच्चों के आध्यात्मिक, नैतिक उत्थान की बात यथासंभव बता सकते हैं।

आचार्यश्री ने कहा कि शिक्षा जगत में, विद्यार्थियों में अहिंसा, नैतिकता, नशामुक्ति, कषाय-आवेश नियंत्रण जैसी चीजों का विकास होता रहे और योग-ध्यान के प्रयोग भी यथासंभव चलते रहें। आचार्यश्री ने विद्यार्थियों एवं शिक्षकों को जीवन विज्ञान के लघु प्रयोगों के अभ्यास भी करवाये।

अणुविभा के न्यासी रतन दूगड़ ने कहा कि अणुविभा के तत्त्वावधान में अणुव्रत समितियों के माध्यम से देश भर में तीन सौ से ज्यादा जीवन विज्ञान प्रशिक्षकों द्वारा जीवन विज्ञान का कार्य स्कूलों में हो रहा है, साथ ही ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन भी हो रहा है। देशभर में 3-4-5 नवम्बर को महाप्रज्ञ अलंकरण दिवस के आयोजन में अणुविभा उपाध्यक्ष एवं जीवन विज्ञान पर्यवेक्षक कैलाश बोराणा, महामंत्री मनोज सिंघवी एवं राज्य प्रभारियों तथा अणुव्रत समितियों का सहयोग मिला।

एलिवेट नशामुक्ति कार्यक्रम का आयोजन

कोबा, गांधीनगर। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी द्वारा युगप्रधान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण की मंगल सन्निधि में 13 अक्टूबर को प्रेक्षा विश्व भारती परिसर में एलिवेट नशामुक्ति कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर आचार्य श्री महाश्रमण ने कहा कि अनेक प्रकार के नशे होते हैं। नशीली चीजों का एडिक्शन हो सकता है। जो भी अहितकर है, उससे बचने का प्रयास करना चाहिए। आचार्यश्री ने कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित एनसीसी कैडेट्स को नशामुक्ति का संकल्प कराया।

आचार्यश्री ने कहा कि मनुष्य को ईमानदारी, अहिंसा, नैतिकता की दिशा में आगे बढ़ने का प्रयास करना चाहिए। जीवन में अहिंसा, संयम के संस्कार आएं। ज्ञान, सद्विचार और सदाचार से जीवन सुवासित रहे।

अणुविभा के चीफ ट्रस्टी तेजकरण सुराणा ने अपनी अभिव्यक्ति दी। एनसीसी कैडेट महक जायसवाल व कृषक पांचाल ने अपने अनुभवों की अभिव्यक्ति दी। गुजरात एनसीबी के जोनल हेड केतन बलिराम पाटिल, एनसीसी गुजरात के मेजर जनरल रायसिंह गोदारा, पंजाब के डीजीपी जितेन्द्र जैन ने 'नशे से कैसे बचाव हो' के संदर्भ में कैडेट्स को जानकारी दी। कार्यक्रम का संचालन अणुविभा के परामर्शक अशोक कोठारी ने किया।

आचार्य श्री तुलसी

अणुव्रत आचार संहिता

1

मैं किसी भी निरपराध प्राणी का संकल्पपूर्वक वध नहीं करूँगा।

•मैं आत्म-हत्या नहीं करूँगा।

•मैं भ्रूण-हत्या नहीं करूँगा।

2

मैं आक्रमण नहीं करूँगा।

•आक्रामक नीति का समर्थन नहीं करूँगा। •विश्व-शांति तथा नि:शस्त्रीकरण के लिए प्रयास करूँगा।

3

मैं हिंसात्मक एवं तोड़-फोड़ मूलक प्रवृत्तियों में भाग नहीं लूँगा।

4

मैं मानवीय एकता में विश्वास करूँगा। •जाति, रंग आदि के आधार पर किसी को ऊँच-नीच नहीं मानूँगा।

•अस्पृश्य नहीं मानूँगा।

5

मैं धार्मिक सहिष्णुता रखूँगा।

•साम्प्रदायिक उत्तेजना नहीं फैलाऊँगा।

6

मैं व्यवसाय और व्यवहार में प्रामाणिक रहूँगा।

•अपने लाभ के लिए दूसरों को हानि नहीं पहुँचाऊँगा। •छलपूर्ण व्यवहार नहीं करूँगा।

7

मैं ब्रह्मचर्य की साधना और संग्रह की सीमा का निर्धारण करूँगा।

8

मैं चुनाव के संदर्भ में अनैतिक आचरण नहीं करूँगा।

9

मैं सामाजिक रूढ़ियों को प्रश्रय नहीं दूँगा।

10

मैं व्यसन-मुक्त जीवन जीऊँगा। •मादक तथा नशीले पदार्थों - शराब, गांजा, चरस, हेरोइन, भांग, तम्बाकू आदि का सेवन नहीं करूँगा।

11

मैं पर्यावरण की समस्या के प्रति जागरूक रहूँगा।

•हरे-भरे वृक्ष नहीं काटूँगा।

•पानी-बिजली आदि का अपव्यय नहीं करूँगा।

उपरोक्त संकल्पों में से सभी या अपने भावानुसार संकल्प लेने के लिए सामने दिये गये चित्र पर क्लिक करें..

अणुविभा

अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी

के गौरवशाली प्रकाशन

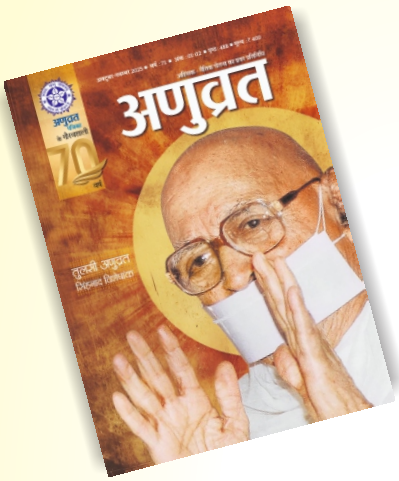

'अणुव्रत'
पत्रिका

प्रकाशन के 70 वर्ष

विशेष छूट योजना

'बच्चों का देश'
पत्रिका

प्रकाशन के 25 वर्ष

सदस्यता अभिवृद्धि के आकर्षक अभियान से जुड़िए

अवधि	अणुव्रत	बच्चों का देश
1 वर्ष	₹ 800	₹ 500
3 वर्ष	₹ 2200	₹ 1350
5 वर्ष	₹ 3500	₹ 2100
15 वर्ष (योगक्षेमी)	₹ 21000	₹ 15000

भुगतान के लिए QR कोड को स्कैन करें

ANUVRAT VISHVA BHARATI SOCIETY
IDBI BANK Rajsamand Branch
A/c No.: 104104000046914
IFSC Code : IBKL0000104

इस मुहिम में अणुव्रत समिति और अणुव्रत मंच के साथ-साथ रुचिशील कार्यकर्त्ता व्यक्तिगत स्तर पर भी जुड़ सकते हैं।

विशेष सदस्यता अभियान की जानकारी के लिए सम्पर्क करें

- संयोजक : विनोद बच्छावत +91 88263 28328
- कार्यालय : +91 91166 34512, 94143 43100